आचार्य भट्टवोसरि

जीवन-परिचय : आचार्य भट्टवोसरि ज्योतिष और निमित्तशास्त्र के आचार्य हैं। श्रवणबेलगोला के अभिलेख 55 में उल्लेख है कि दामनन्दि के शिष्य भट्टवोसरि ने महावादी विष्णुभट्ट को वाद के शास्त्रार्थ में पराजित किया था।

वोसरि के पिता का नाम दुर्लभराज, दादा का नाम नारायण और बड़े भाई का नाम कोक था। यह ब्राह्मण थे। जैनगुरुओं के प्रभाव से ये जैन धर्म में दीक्षित हो गये थे।

आचार्य दामनन्दि भोजराज के समकालीन थे, अत: उनके शिष्य का समय भी ई. सन् की 11वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध सिद्ध होता है।

रचना-परिचय : आचार्य भट्टवोसरि के द्वारा लिखित एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'आयज्ञानतिलक' है—

1.आय-ज्ञान-तिलक : यह ग्रन्थ प्रश्नविद्या से सम्बन्ध रखनेवाला महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें कुल 415 गाथाएँ और 25 अध्याय हैं। प्रश्नशास्त्र की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें आठ आयों (ध्वज, धूम, सिंह, गज, खर, श्वान, वृष और ध्वांक्ष) द्वारा प्रश्नों के शुभाशुभ फल को जानने और बतलाने की कला का विस्तार से वर्णन किया है। इस ग्रन्थ पर स्वयं ग्रन्थकार की रची हुई संस्कृत-टीका भी है।